दिसम्बर, 2022

न्यूज़ लैटर

1- संपादकीय

2- 13वे राष्ट्रीय सम्मेलन की ओर बढ़ते क़दम - समानता के लिए एकजुट संघर्ष

मरियम धावले,
राष्ट्रीय महासचिव एडवा

3- कश्मीर में एडवा का गठन –

सुभाषिनी अली (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - एडवा)

4- हरियाणा में एडवा की सांगठनिक कार्यशाला –

सविता (एडवा , केंद्रीय कमेटी सदस्य)

5- आफ़ताब के बहाने -

मधु गर्ग (राष्ट्रीय संयुक्तएडवा)

6- अंकिता भंडारी –

सुनीता (केंद्रीय कमेटी सदस्य, एडवा)

7- देर से समझ आया -कविता-

शालिनी सिंह (सदस्य , जनवादी लेखक संघ)

सम्पादकीय

जब से बिलकीस बानो और उनके परिवार की महिलाओं, बच्चों और मर्दों के बलात्कारी-हत्यारों को जेल से छोड़ दिया गया, उनका हार-माला से स्वागत किया गया, उन्हें 'संस्कारी ब्राह्मण' की पदवी से नवाज़ा गया, तबसे हिंसा ही हिंसा। मामूली हिंसा नहीं। महिला के शरीर को टुकड़ों में काट देना और टुकड़ों को व् उसके सर को फ्रिज में रख देना, बाप के शरीर के टुकड़े करके उसे इधर-उधर छिपाने की कोशिश करना, बेटी की हत्या कर, उसके शरीर को काटकर एक सूटकेस में ठूंस कर सडक के किनारे डाल देना....कोई अंत ही नहीं है, देश का कोई हिस्सा बचा नहीं है।

यह दावा नहीं किया जा रहा है की बढती हिंसा का कारण गुजरात सरकार द्वारा 11 सजायाफ्ता अपराधियों को छोड़ना या उनके इस छूटने पर उनका महिमामंडन किया जाना इस बढती हिंसा का कारण है। यह शायद संयोग ही है। लेकिन बहुत ही डरावने आंकड़े और खबरे यही बता रहे हैं की 15 अगस्त, 2022 के बाद से एक बहुत ही क्रूर तरह की हिंसा का दौर शुरू हुआ है।

श्रद्धा का मामला तो अभी भी टी वी चैनलों पर चल रहा है। उसके शरीर के कितने टुकड़े किये गए। उसका सर किस तरह फ्रिज में कई कई दिन तक पड़ा रहा। जैसा वीभत्स उसके साथ इसके पहले भी बहुत मार पीट और हिंसा हो चुकी थी। और यह सब उसके साथ रहने वाले आफताब ने किया। आफताब ने किया इस लिए रोज़ उसके काले कारनामो की बात, सुबह से शाम तक हमे सुनाई जा रही है। लगता है की हमे यही समझाया जा रहा है कि उसने श्रद्धा के साथ यह सब कुछ इसी लिए किया क्योंकि व मुसलमान था।

एक माँ-बेटे ने मिलकर बाप को मार दिया; इसी वजह से एक माँ-बाप ने मिलकर बेटी को मार दिया; पता नहीं कितने पतियों ने अपने पत्नियों को मार डाला; एक लड़के ने अपनी शादी-शुदा दोस्त को मार डाला – यह वारदात हमारी आँखों के सामने लायी जाती हैं और फिर तुरंत हटा दी जाती हैं। जैसे कि उनका कोई महत्त्व ही नहीं है। जैसे की हिन्दुओं के हाथ मारे जाने वालों के जान की कोई कीमत ही नहीं है।

यह कितनी खतरनाक बात है।

जो लोग आफताब की बात को दोहराते चले जा रहे हैं, उस पर हमला भी कर रहे हैं। उसके काले कारनामों के बारे में बोल बोलकर हिन्दू लड़कियों को मुसलमानों से दोस्ती और प्रेम

करने से डरा रहे हैं उनको पता ही नहीं है की वह दरअसल अपराधियों का कितना मन बढ़ा रहे हैं, हिंसा के शिकार लोगों की संख्या कितनी बढा रहे हैं।

सवाल सिर्फ इतना ही नहीं की हिन्दू अपराधियों की चर्चा बहुत कम होती है या होती ही नहीं है, उनके जुर्म को भी इतना संगीन नहीं माना जाता है जितना कि एक मुसलमान द्वारा किये गए जुर्म को समझा जाता है। सवाल यह भी है कि मुसलमान के जुर्म की दास्ताँ को बार-बार दोहराकर क्या हिन्दुओं द्वारा किये गए जुर्म को कुछ हद तक छुपाया नहीं जा रहा है? उन पर बहुत कम समय के लिए लोगों के सामने रखकर, क्या उनकी क्रूरता को घटाया नहीं जा रहा है? और हिन्दू अपराधियों के साथ नरमी बरतकर, उन पर चलने वाले मुकद्दमो को लगातार लंबित करके, जैसा कि हाथरस के मामले में आज तक हो रहा है, उन्हें हल्की सज़ा देकर या फिर कुछ दिन बाद छोड़कर, उन्हें भेडियो की तरह फिर मासूम बच्चियों, लड़कियों और महिलाओं का शिकार करने के लिए आज़ाद कर दिया जायेगा।

साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण बहुत ही खतरनाक चीज़ है। बहुसंख्यक समाज के महिला और पुरुष यह समझते हैं कि यह अल्पसंख्यकों के लिए ही खतरनाक है और इसका मजा भी लेते हैं। उन्हें इस घटिया मज़ा लेने की प्रक्रिया को त्याग कर सोचने, समझने की ज़रूरत है।

उन्हें इंसान नहीं भी बनना है, केवल अपने हित के बारे में सोचना है तो सोच लें पर इस बात का ध्यान रखें कि अल्प संख्यक अपराधियों पर पूरा ध्यान केन्द्रित कर मीडिया, प्रशासन और सरकार किस बात को अंजाम दे रही है? बहुसंख्यक समाज की महिलाओं बच्चियों और लड़कियों के साथ अत्याचार और हिंसा करने वाले सहधर्मियों की ख़तरनाक करतूतों पर पर्दा डालने और उनके अपराधों पर पर्दा डालने के लिए तो नहीं?

ध्रुवीकरण के हर पहलु से लड़ने में ही सम्पूर्ण समाज का भला है।

सुभाषिनी अली

13वे राष्ट्रीय सम्मेलन की ओर बढ़ते क़दम - समानता के लिए एकजुट संघर्ष

मरियम धावले,

राष्ट्रीय महासचिव एडवा

AIDWA 13th NATIONAL CONFERENCE 2023 JANUARY 6-9 THIRUVANANTHAPURAM

अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति
13 वां राष्ट्रीय सम्मेलन
2023 जनवरी 6-9
तिरुवनंतपुरम

हम "समानता के लिए एकजुट संघर्ष" के नारे के साथ 13 वें राष्ट्रीय सम्मेलन की ओर बढ़ रहे हैं । यह सम्मेलन हजारों ईकाई सम्मेलनों , सैकड़ों जिला सम्मेलनों और 22 राज्य सम्मेलनों के होने के बाद संपन्न हो रहा है ।

हजारों महिलाएं ने मोदी सरकार की महिला विरोधी व जनविरोधी नीतियों के पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा मे भागीदारी की है ।ये चर्चाएं हजारों गांवों/ मोहल्ला सम्मेलनों से लेकर राज्यस्तरीय सम्मेलनों में हुई हैं।

महिलाओं में गुस्से के साथ साथ निराशा भी है । एक सम्मानजनक जीवन न मिलने को लेकर महिलाएं अपने को ठगा हुआ महसूस करतीं हैं जिसे लेकर उनके अंदर जबरदस्त नाराज़गी है। महिलाएं बहुत नाराज़ हैं क्योंकि सरकार ने उनकी तकलीफों को देखने तक की जरूरत नहीं समझी है , कुछ करना तो दूर की बात है ।

वे निराश हैं क्योंकि वे इस बात को लेकर डरी हुई हैं कि उनके जीवन में में कोई सुधार होगा। वे एडवा के पास इस उम्मीद से आतीं हैं कि एकजुट संघर्ष उनके जीवन में कुछ बदलाव लायेगा।

भाजपा आरएसएस के शासन काल में बहुत सारे वादे किए गये जिन्हें "जुमला" कहना ठीक होगा । महिलाएं आज भी उन "अच्छे दिनों" का इंतजार कर रहीं हैं जब उनके बैंक खाते में

15 लाख रुपये आयेंगे और 2 करोड़ नौकरियां होंगी आदि आदि। दरअसल , गरीबों की ग़रीबी का मज़ाक बनाया जा रहा है । उन्हें अच्छे जीवन के झूठे सपने दिखाकर वोट बटोरने की चाल है । यह कारपोरेट परस्त , जनविरोधी बीजेपी आरएसएस की चाल है ।और जब ग़रीब इन चालों की असलियत समझते हुए मूर्ख बनना बंद कर देता है तब ये लोग सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का हथियार चलाते हैं । कारपोरेट सांप्रदायिकता आज आरएसएस भाजपा का ब्रांड है ।

महिलाओं को मनुवादी प्रतिगामी विचारधारा को लागू करने के लिए लक्षित किया जा रहा है । शिक्षा को इतना मंहगा कर दिया गया है कि वह गरीबों और महिलाओं की पहुंच से दूर हो गई है । महिला आंदोलन के संघर्षों से हासिल किए गये अधिकारों को ध्वस्त किया जा रहा है ।मोदी सरकार बहुत सुनियोजित तरीके से सांप्रदायिक विभाजन व जाति प्रथा को मजबूत कर रही है । महिलाओं के खिलाफ हिंसा विशेषकर घरेलू हिंसा में बढ़ोतरी ने महिलाओं के जीवन को बहुत असुरक्षित किया है । एक बड़े वर्ग के लोगों को उनके अधिकारों से वंचित करना , समानता के मुद्दे को मिटा देना, दलितों , आदिवासियों, अल्पसंख्यकों व महिलाओं पर हमले को जायज़ ठहराना आदि मोदी सरकार का यही जनविरोधी चरित्र है। महिलाएं देख रहीं हैं कि किस प्रकार घृणा की राजनीति करोड़ों लोगों की जिंदगी बर्बाद कर रही है ।

इस हमले के खिलाफ प्रत्येक को संगठित करना बड़ी चुनौती है । समानता पर आधारित समाज बनाने की जरूरत को समझाने के लिए वैकल्पिक अभियान चलाने होंगे । भेदभाव रहित और समानता पर आधारित संसार में ही महिलाओं को बराबरी का इन्सानी हक़ मिल सकता है। सम्मेलनों में सैकड़ों महिलाओं ने वैज्ञानिक व तार्किक सोच के प्रचार की जरूरत पर बोला। उन्होंने तत्काल आरएसएस द्वारा बढाये जा रहे अंधविश्वासों का मुकाबला करने पर जोर दिया । शराब और नशीली दवाइयों का बढ़ता प्रचलन देश की युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है । एडवा नशे के खिलाफ युवाओं के बीच चर्चाएं आयोजित करेगी, विशेषकर युवा महिलाओं को नशे के ख़तरों का पर्दाफाश करना होगा और एक बेहतर दुनिया बनाने के संघर्षों में आगे आना होगा ।

6 जनवरी से 9 जनवरी तक त्रिवेंद्रम केरल में होने वाले आगामी 13 वें राष्ट्रीय सम्मेलन में उक्त तथा और भी तमाम अन्य मुद्दों पर चर्चा होगी । 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लगभग 850 प्रतिनिधि चर्चा में हिस्सा लेंगे और भारत में एक मजबूत महिला आंदोलन और संगठन की योजना बनायेंगे ।

हम सब " समानता के लिए संघर्ष में एकजुट हों " ।

कश्मीर में एडवा का गठन

सुभाषिनी अली

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, एडवा

20 अक्टूबर 2022 – चार साल बाद कश्मीर आने का मौका मिला। कश्मीर सहमा हुआ लग रहा था। बादलों से घिरा था, बूंदे पड़ रही थी। हवाई अड्डे से चर्च रोड, जहां हमें ठहरना था, का रास्ता।।।।हम लोग गाड़ी की खिड़की से ताकते ही रह गए। हर १० कदम पर बंदूक-धारी फौजी या CRP का जवान या कश्मीर पुलिस का सिपाही। और उसके चारों और, कांटेदार तार। यह नज़ारा अब कश्मीर की प्रकृति का उतना अहम हिस्सा बन गया है जैसे चिनार का पेड़, जैसे डल के ताल की पानी की लहरें।

2020 में कश्मीर को राज्य से केंद्र-शासित इलाका बना दिया गया; लद्दाख को उससे अलग कर दिया गया। दिल्ली सरकार के प्रतिनिधि – उप राज्यपाल को उसका बादशाह बना दिया गया और उसे कांटेदार तार और बंदूक-धारियों के घेरे में कैद कर दिया।

तबसे अब तक कितने लोग मारे गए, कितने लापता हो गए, कितनी महिलाओं की बे-इज्ज़ती की गई – इस सब की कोई गिनती ही नहीं है। लेकिन कश्मीर की आत्मा को मारा नहीं जा सका है। कश्मीर की औरतों के जज्बे को दबाया नहीं जा सका है। वह हर तरफ दिखाई देती हैं। वे पढ़ती हैं, काम करती हैं, डल के ताल पर अपने शिकारों को चलाती हैं, अपने बच्चों को स्कूल पहुंचाती हैं, अपनी सहेलियों के साथ झुण्ड बनाकर शालीमार और निशात की खूबसूरती बढाती हैं और अपनी आज़ादी के साथ किसी तरह का समझौता करने के लिए तैयार नहीं हैं।

इन कश्मीरी औरतो ने हमेशा हमें प्रभावित और प्रेरित किया है। हमारी हमेशा से इच्छा रही है कि इनको भी ऐडवा में शामिल किया जाए, कश्मीर में ऐडवा की मजबूत इकाई कायम की जाये। इसी काम को अंजाम देने कश्मीर आना हुआ था।

22 अक्तूबर को करीब 110 महिलाएं हमसे मिलने के लिए इकठ्ठा हुईं। हर उम्र की, कई इलाकों की। आंगनवाडी, आशा और स्कूल में भोजन बनाने वाली; वकील; शिक्षक; छात्राएं; घर को सम्हालने वाली। और सब में गज़ब की जिजीविषा और कुछ कर दिखाने की ललक। उनके सामने बड़ी शर्मिंदगी का एहसास हुआ। उनके लिए हम कितना कब बोले, उनकी पीड़ा को हमने कितना कम महसूस किया। उनके अधिकारों की रक्षा के लिए हम कितना कम लडे। उनके साथ होने वाली हिंसा और अत्याचार के सामने हम कितने लाचार साबित हुए।

लेकिन वे बहुत दरिया दिल महिलाएं थीं। हमारी कमजोरियों को उन्होंने अनदेखी कर दी और इस बात पर अपनी ख़ुशी व्यक्त की कि हम उनके बीच आये हैं और उन्हें अपने साथ जोड़ना चाहते हैं। उनमे से कई ने माइक पकड कर अपने बात को रखा। कई तो पहले बार दूसरों के सामने बोल रही थीं। उन्होंने काम की जगहों पर हो रहे अन्याय की बात बताई और अपने संघर्षों के बारे में भी बताया। कानून पढने वाली छात्राओं का एक झुण्ड था। वे सब बोलीं और उन्होंने एक ही बात को दोहराया – हमने संविधान को पढ़ा है। उस संविधान में जो कुछ हमें अधिकार के रूप में मिला है उसे हम छोड़ने वाले नहीं हैं। अब हम संविधान दिखाकर अपनी लड़ाई लड़ेंगे और ज़ुल्म करने वालों को उसका पाठ पढ़ाएंगे।

समय का पता ही नहीं चला। राहत पहुंचाने वाली धूप थी। फिर हलकी सी सर्द हवा ने याद दिलाया कि लोगों को दूर-दूर जाना है। यह तय हुआ कि हमारे संगठन का नाम 'कश्मीर वीमेंस एसोसिएशन' होगा, उसके संयोजक लतीफा घनी और मुबीना अख्तर होंगे। सदस्यता शुरू की जायेगी। जम्मू में भी मीटिंग होगी। एक जानदार महिला संगठन जम्मू-कश्मीर में बन कर रहेगा।

जनवादी महिला समिति हरियाणा की राज्य स्तरीय कार्यशाला सम्पन्न

सविता
प्रदेश अध्यक्ष
(ऐडवा, हरियाणा)

जनवादी महिला समिति हरियाणा की दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला 12-13 नवंबर को रोहतक में सम्पन्न हुई। कार्यशाला में राज्य कमेटी सदस्यों के अलावा जिलों के प्रधान, सचिव और कोषाध्यक्ष शामिल हुए।

कार्यशाला की शुरुआत में राज्य महासचिव उषा सरोहा ने कार्यशाला का उद्देश्य रखते हुए कहा कि देश के बदलते हालात में संगठन के समक्ष चुनौतियां बहुत ज्यादा बढ़ी है। इन चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए नेतृत्वकारी साथियों की वैचारिक तौर पर मजबूती होना बेहद जरूरी है। इसके लिए संगठन के परिप्रेक्ष्य को गहराई से आत्मसात करना, दृढ़ता से संघर्षों को नेतृत्व देना, जमीनी स्तर पर संगठन को मजबूत करना, सदस्यता बढ़ाना, इकाइयों को आत्मनिर्भर बनाना और संगठन के लिए ज्यादा समय उपलब्ध युवा कार्यकर्ताओं की टीम तैयार करना आवश्यक है। इसी लिए यह कार्यशाला आयोजित की जा रही है।

कार्यशाला के पहले दिन वर्तमान समय में ‘महिलाओं के समक्ष चुनौतियां‘ विषय पर जनवादी महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुभाषिनी अली सहगल ने बातचीत रखी। सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगमति सांगवान ने की और संचालन राज्य कोषाध्यक्ष राजकुमारी दहिया ने किया। सुभाषिनी अली सहगल ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस समय परिस्थितियां

बहुत तेजी से बदल रही हैं। पुरानी चुनौतियां तो हैं, नई भी पैदा हो रही हैं। इस समय सबसे बड़ी चुनौती असमानता है। घर के बाहर व अन्दर महिलाएं बहुत ज्यादा समस्याओं का सामना कर रही हैं। इसका कारण महिलाओं का दूसरा दर्जा है। दूसरी चुनौती जाति व्यवस्था है जिसमें जन्म से ही लोगों को असमान समझा जाता है। आजादी के 75 साल बाद भी जाति के आधार पर लोगों के साथ भेदभाव जारी है। वर्ण व्यवस्था को बनाए रखने के लिए खान-पान, रहन-सहन, विवाह आदि के नियम बनाए हुए हैं। परंतु लंबे समय से समानता और शोषण के खिलाफ संघर्ष जारी है तथा इसके लिए लोगों ने बहुत ज्यादा कष्ट सहे हैं। 2800 साल पहले जैन व बौद्ध धर्म ने जात-पात के खिलाफ अभियान चलाया। महात्मा बुद्ध के संघ में हर जाति के व्यक्ति और महिलाओं को जगह मिली। उन्होंने जाति को तोड़ने के लिए मांग कर खाना खाने की शुरुआत की। उस समय महिलाओं ने अपनी मुक्ति की कविताएं लिखी जिन्हें थेरी गाथा के नाम से जाना जाता है। सम्राट अशोक जो इस देश के बहुत बड़े राजा थे उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया। बौद्ध धर्म की बढ़ती लोकप्रियता से परेशान ब्राह्मणों ने इसका जबरदस्त विरोध किया और इसे देश से बाहर खदेड़ने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए। इसी दौरान ब्राह्मणों द्वारा मनुस्मृति लिखी गई। हमारे देश में बहुत से सूफी संत भी हुए जिन्होंने बराबरी की बात उठाई। बहुत सी महिलाएं उनकी अनुयाई बनी। मीराबाई रविदास की अनुयायी थी। कर्नाटक में बसवा नाम के व्यक्ति हुए जिन्होंने जात पात के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने एक ब्राह्मण लड़की का विवाह पर छूट के साथ करवाया परंतु लोगों ने उस दंपति को दंडित किया और मार डाला। यह इज्जत के नाम पर हत्या की पहली घटना थी। सावित्रीबाई फुले ने भारी विरोध के बावजूद फातिमा शेख के साथ मिलकर स्कूल चलाया। बच्चियों के बहुत कम उम्र में विवाह होते थे। महिलाओं को संपत्ति में अधिकार नहीं था और ना ही वह तलाक ले सकती थीं। 1950 में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की बदौलत महिलाओं और दलितों को सविधान के जरिए अपने अधिकार मिले। हिंदू महासभा जुड़े नेताओं ने संविधान का विरोध किया था और वे मनुस्मृति को लागू करने की बात कह रहे थे। आज इसी ब्राह्मणवादी, मनुवादी सोच के लोग सत्ता पर काबिज हो गए हैं। एक तरफ संघर्षों से हासिल अधिकारों पर हमला हो रहा है दूसरी तरफ एकता को तोड़ने की कोशिश हो रही है। आज अंबेडकर को केवल दलित महिलाओं को ही याद नहीं करना चाहिए बल्कि हम सब महिलाओं को उन्हें याद करना चाहिए। आज एकता को बनाए रखने की सबसे ज्यादा जरूरत है।

सुभाषिनी अली के वक्तव्य के बाद महिलाओं के 5 समूह बनाते हुए चर्चा आयोजित की गई। बहस में 15 साथियों ने हिस्सा लिया। सत्र की अध्यक्षा जगमति सांगवान ने समापन करते हुए

कहा कि हमें आर्थिक और सामाजिक दोनों मुद्दों को साथ-साथ उठाना होगा। हम जिन मुद्दों पर लड़ाई लड़ चुके हैं, आज उन मुद्दों पर भी हमें निशाना बनाया जा रहा है। महिलाओं को भी हमारे खिलाफ तैयार किया जा रहा है। हमें विरोध की इस प्रक्रिया को भी समझना होगा। सामाजिक संघर्ष आसान नहीं है इसलिए अब पूरी मुस्तैदी से काम करने की जरूरत है।

दूसरे दिन संगठन एवं नेतृत्व निर्माण विषय पर राष्ट्रीय महासचिव मरियम धवले ने बातचीत रखी। सत्र की अध्यक्षता राज्य महासचिव उषा सरोहा और संचालन राज्य सहसचिव अमिता ने किया। हमारे समक्ष उपस्थित चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए सबसे पहले हमें जनवादी महिला समिति में होने के अपने मकसद को समझना होगा। हमारे संगठन की नींव जिन नेताओं ने रखी वे समाज व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहते थे। उन्होंने हर तरह के कष्ट उठाते हुए सांगठनिक जिम्मेदारियां बहुत मजबूती से निभाई। इस समय हमारी नेतृत्वकारी साथियों को समाज परिवर्तन की इस लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें सांगठनिक परिप्रेक्ष्य को आत्मसात करना और स्वाध्याय करना बेहद जरूरी है। संघर्ष के साथ-साथ संगठन की मजबूती के लिए काम करना होगा। घर-घर जाकर सदस्यता करना, हरेक तबके की महिला को संगठन से जोड़ना, उन महिलाओं में से आगामी नेतृत्व के लिए पहचान करना आदि योजना हमारे पास होनी चाहिए। सामूहिक कार्यप्रणाली सुनिश्चित करने के लिए नेता की जिम्मेदारी है, टीम को साथ लेकर चलना और और टीम की जिम्मेदारी है योजना को अमल में लाना। हम इस कार्यप्रणाली से ही सामुहिक नेतृत्व विकसित कर सकते हैं। वक्तव्य के समापन के बाद बहस में 17 साथियों ने हिस्सा लिया और बहुत महत्वपूर्ण सवाल-जवाब हुए। अंत में कार्यशाला का समापन करते हुए सत्र की अध्यक्षा और राज्य महासचिव उषा सरोहा ने आगामी कार्यों का शेड्यूल रखा। हरेक जिला कमेटी ने कम से कम दो इकाइयां जीवंत और आत्मनिर्भर बनाने का निश्चय किया गया। नाच-गाने के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।

आफ़ताब के बहाने ..

नफ़रती राजनीति का घृणित प्रचार

मधु गर्ग

राष्ट्रीय संयुक्त सचिव, एडवा

अभी कुछ महीने पहले अखबारों में हरियाणा की एक ख़बर छपी थी कि रोहतक की नवयुवती रेखा मलिक ने उस पंडित के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया जिसने उसके होने वाले पति की कुंडली और गुण मिलाते हुए एक सफल और सुखी जीवन की भविष्यवाणी के साथ मोटी रकम भी वसूली थी। रेखा की शादी तीन महीने में ही टूट गई थी।

बहादुर रेखा को सलाम! कि उसने इन पाखंडियों से लोहा लिया, किन्तु सैकड़ों, हज़ारों रेखायें मां बाप की तय की हुई शादी और पंडितों की सुखी जीवन की भविष्यवाणी के बाद भी घुट रहीं हैं, पीटी जा रहीं हैं, जलाई जा रहीं हैं। दहेज़ हत्या के आंकड़े हर दिन बढ़ रहे हैं।

एनसीआरबी 2021 के आंकड़ों के अनुसार देश में एक साल में 6,589 दहेज हत्या के मामले दर्ज हुए। ये सभी पारंपरिक तरीके से हुए विवाह थे। हर तीसरी औरत आज घरेलू हिंसा की शिकार हो रही है। किंतु भारतीय संस्कृति के इन तथाकथित रक्षकों का ध्यान घरों की चारदीवारी में घुटती सिसकियों और औरतों के बलिदान पर टिके कत्लगाह बनते "घरों" की ओर नहीं जाता है, इन्हें श्रद्धा और आफ़ताब दिखाई देते हैं, जिनके लिव इन रिलेशनशिप और आफ़ताब के मज़हब को इस नृशंस हत्या का जिम्मेदार बनाया जा रहा है। इस नृशंस हत्या की जितनी भी निंदा की जाये कम है। हत्यारे आफ़ताब को कानून के अनुसार अविलंब सजा मिलनी चाहिए, किन्तु इस नृशंस हत्याकांड को नफ़रत फैलाने का औजार बना लेना और इसी बहाने लड़कियों पर पितृसत्तात्मक मूल्यों को थोपना निश्चित रूप से नफ़रती और मनुवादी राजनीति की घृणित चाल है।

श्रद्धा के बहाने तमाम चैनल अब तथाकथित भारतीय संस्कृति के रक्षक बनकर लड़कियों को भाषण दे रहे हैं कि जो लड़कियां मां बाप की बात नहीं मानतीं, उनका यही हश्र होता है, मतलब लड़की एक गाय है जिसे जिस खूंटे में बांध दो उसे वहीं बंधे रहना चाहिए।

भाजपा के नेता नफ़रती ट्वीट कर एक विशेष समुदाय के खिलाफ ज़हर घोल रहे हैं और लड़कियों को अपना मनुवादी ज्ञान बांट रहे हैं। उदाहरण के लिए "गोली मारो" बयान के कुख्यात कपिल मिश्रा का ट्वीट कि "धर्मनिरपेक्षता के झूठे मूल्य हमारी बहन बेटियों के खून से सने हैं"

एक भाजपाई लिख रहे हैं कि “हमें अपनी बहन बेटियों पर नियंत्रण रखना चाहिए, नहीं तो श्रद्धा जैसे हश्र के लिए तैयार रहना चाहिए”. आसाम के मुख्यमंत्री हिमंत सरमा गुजरात में चुनाव प्रचार के दौरान भाषण दे रहे हैं कि यदि मोदीजी जैसे ताकतवर नेता नहीं होंगे, तो हर शहर में आफ़ताब पैदा होंगे।

आफ़ताब और श्रद्धा के बहाने "लव जिहाद" जैसे नफ़रती लफ्ज़ पर बहस को तेज़ किया जा रहा है। इसे इस्लामी आतंकवाद और धर्मपरिवर्तन से जोड़ा जा रहा है। सच्चाई यह है कि राष्ट्रीय महिला आयोग तक कह चुका है कि "लव जिहाद" जैसे मामलों का कोई सबूत नहीं है, किन्तु एक नृशंस हत्या को एक अपराध और हत्यारे को अपराधी की तरह न देखकर एक ओर उसका सांप्रदायिकीकरण और दूसरी ओर लड़कियों को मनुवादी ढांचे में धकेलने की साज़िश रची जा रही है.

ऐसे में यह याद दिलाना ज़रूरी है कि इस तरह के मानसिक विक्षिप्त और हत्यारे प्रवृत्ति के लोगों की कोई मज़हबी पहचान नहीं होती है। जबलपुर की हाल की घटना में अभिजीत पाटीदार ने अपनी प्रेमिका का गला रेत कर हत्या का वीडियो वायरल किया। लखनऊ में कुछ साल पहले का नृशंस गौरी हत्याकांड जिसमें लड़की की हत्या कर कुल्हाड़ी से उसके शरीर को काटा गया और शहर के अलग अलग हिस्सों में हत्यारे ने फेंका। कुछ साल और पीछे जायें तो दिल्ली का तंदूर हत्याकांड, देहरादून का राजेश गुलाटी जिसने अपनी पत्नी की हत्या कर उसके शरीर के 70 टुकड़े किये।

'जाति' और 'गोत्र' के नाम पर सैकड़ों बेटियों को अपने हाथों कत्ल करने वाला समाज (इज्जत के नाम पर हत्या) आज श्रद्धा के लिए घड़ियाली आंसू बहा रहा है। ऐसे ही कितने वीभत्स मामले हैं जो आज भी सिहरन पैदा कर देते हैं। निश्चित रूप से हत्यारों से घृणा करनी चाहिए, किन्तु उन हत्यारों के कारण किसी समुदाय को कटघरे में खड़ा करना एक राजनैतिक षणयंत्र के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

अंकिता भंडारी हत्याकांड में वीआईपी कौन?
(संयुक्त फेक्ट फाइंडिंग दल में शामिल एडवा प्रतिनिधियों की साझा जानकारियों से)

आज भी उत्तराखण्ड के पौड़ी की रहने वाली अंकिता हत्याकाण्ड से जुड़ा वीआईपी सत्ता के गलियारों में छुपा हुआ है, जिस बारे में सभी महकमे चुप्पी साधे कई राज दबाये बैठे है| जब इस धटना के विरोध में उत्तराखंड से लेकर भारत के कोने कोने तक जस्टिस फॉर अंकिता की मांग पर प्रदर्शन हो रहे थे,तब राज्य सरकार के इशारे पर सरकारी मशीनरी प्रथम दृष्टया साक्ष्यों पर बुलडोजर चला रही थी, जिससे पूरे घटनाक्रम में राजसत्ता की गहरी संलिप्तता उजागर हुई | इस मामले का प्रमुख आरोपी पुलकित आर्य भाजपा का पूर्व दर्जा राज्यमंत्री विनोद आर्य का बेटा है,जिसने अन्य दो साथियों के साथ मिलकर घटना कों अंजाम दिया था|

उत्तराखंड के पौड़ी जिले के श्रीकोट के सोनी देवी और बीरेंद्र सिंह भंडारी की 19 वर्षीय होनहार बेटी अंकिता भण्डारी ने वर्ष 2020 में भगतराम मॉडर्न स्कूल से 88% अंकों के साथ इंटरमीडिएट पास किया और 2021 में देहरादून के श्रीराम इंस्टीव्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट ज्वाइन किया लेकिन आर्थिक मजबूरियों की वजह से मेनेजमेंट द्वारा मांगी गई फीस रु० 40000 जमा ना कर पाने के कारण वह अपना कोर्स पूरा नहीं कर पाई। अंकिता के पिता बेरोजगारैं और मां आगनबाड़ी कार्यकर्ता हैं और भाई पढ़ रहा है। तमाम बाधाओं के बाबजूद अंकिता अपने परिवार के लिए मददगार बनना चाहती थी, इसलिए उसने ऑनलाइन स्टेनोग्राफी सीखीए फिर अंकिता के एक दोस्त पुष्प ने वनंतारा में खाली पद के बारे मे उसे बताया | 18

अगस्त 2022 को अंकिता ने वनंतरा रिजॉर्ट, गंगाभोगपुर, तहसील यमकेश्वर, जिला पौड़ी में रिसेप्शनिस्ट के रूप में काम करना शुरू किया। उसे रिसॉर्ट में एककमरा रहने कों मिला था, 17 सितम्बर तक अंकिता की अपने घर में कॉन्फ्रेंस से बात हुई थी,18 तारीख कों उसकी माँ ने उसे मेसेज किया लेकिन अंकिता का कोई जवाब नहीं आया उसी दिन उसका फोन स्विच ऑफ हो गया था |19 तारीख कों पुष्प ने सबसे पहले अंकिता के माता पिता कों सूचित किया कि अंकिता रिसोर्ट से गायब है बाद में आरोपी रिसोर्ट के मालिक ने उन्हें यही जानकारी देने के लिए कॉल किया | जबकि 18 सितम्बर कों ही आरोपी रिपोर्टर पुलकित ने अपने दो होटल कर्मचारियों सौरभ और अंकित के साथ मिलकर अंकिता की हत्या कर दी थी |

जानकारी के मुताबिक घटना के दिन 18 सितंबर 2022 को अंकिता को होटल के कर्मचारियों ने दोपहिया वाहनों पर पुलकित आर्य (रिसॉर्ट के मालिक), सौरभ और अंकित के साथ रिसॉर्ट से बाहर जाते देखा। रसोइया को उन सभी के लिए रात का खाना बनाने के लिए कहा गया था लेकिन जब वे वापस आए तो अंकिता उनके साथ नहीं थी। कर्मचारियों को बताया गया कि वह अपने कमरे में है और वह अपने कमरे में खाना खाएगी । पुलकित आर्य ने 20 तारीख को पटवारी (राजस्व निदेशक) वैभव प्रताप सिंह के पास गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई, जो कथित तौर पर छुट्टी पर चला गए था। अंकिता के "गायब" होने के बारे में 20 तारीख को कार्यवाहक पटवारी विवेक कुमार ने पुलकित की शिकायत के आधार पर मामला दर्ज किया । पिता द्वारा बहुत भागदौड़ करने के बाद, 21 तारीख को मामला राजस्व पुलिस से नियमित पुलिस को स्थानांतरित कर दिया गया। जबकि उनकी आरोपियों के खिलाफ लिखाई जा रही रिपोर्ट कों अनावश्यक बताते हुए नकार दिया गया |

रिसोर्ट में अंकिता के कमरे वाले हिस्से कों भी जला दिया। पुलिस ने पुलकित आर्य, सौरभ भास्कर और अंकित को गिरफ्तार किया है।पुलकित के पिता विनोद आर्य कों भी बाद में 23 तारीख को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पता चला है कि पुलकित अंकिता को एक वीआईपी को "विशेष सेवा" देने के लिए मजबूर कर रहा था।यह वी आइ पी गेस्ट हॉउस वनंतारा रिसोर्ट के पास ही एशो आराम का अड्डा बना रहा है | 18 सितम्बर को पुलकित अंकिता के कमरे में था तब अंकिता के रोने चिल्लाने की आवाज आइ उसके साथ क्या हुआ क्यों कोई मदद के लिए नहीं पंहुचाए अभी तक सामने नहीं आया द्य टीम द्वारा पूछे जाने पर कि आखिर वीआईपी कौन है के सवाल को सीधे तौर पर खारिज कर दिया गया द्यबाद में डीएम पौड़ी ने पटवारी वैभव प्रताप सिंह व कार्यवाहक पटवारी विवेक कुमार को निलंबित

कर दिया।अंकिता का शव 24 तारीख को चिल्ला बैराज से बरामद किया गया था। उसी दिन एम्स ऋषिकेश में पोस्टमार्टम किया गया। डीआईजी पी रेणुका देवी के नेतृत्व में एसआईटी का गठन किया गया है। विनोद आर्य और अंकित को बीजेपी से निकाला गया है, पुलकित के भाई को भी ओबीसी आयोग के उपाध्यक्ष पद से बर्खास्त कर दिया गया था।

25 तारीख को लोगों के विरोध के बावजूद शाम 6 बजे अंकिता के शव का अंतिम संस्कार सूर्यास्त के बाद कर दिया गया द्यएजबकि जांच कार्यवाही तक शव को सुरक्षित रखने से मामले में आगे के साक्ष्य जुटाने में मदद रहती ।एक प्रारंभिक पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट अपनी 'अस्थायी राय" देती है लेकिन यौन हमले की पुष्टि नहीं करती है। शरीर पर मृत्यु पूर्व चोटों के निशान थे| जबकि इस मामले में मृत्यु का कारण डूबना और दम घुटना दर्शाया गया है।

बातचीत में अंकिता के पिता ने कहा कि पुलकित ने उन्हें यह बताया कि अंकिता तनाव में थी इसलिए उसे खुश करने के लिए बाहर ले गए थे और उसे गोल गप्पे खिलाए थे।वह अंकिता के दोस्त कों संदेह के घेरे में लाने की कोशिश कर रहा था जब उसे पटवारी ने बुलाकर उससे अंकिता और पुष्प की बातचीत की ऑडियो क्लिप सुनने को कहा तो वह उठ खड़ा हुआ | 22 तारीख को मामला लक्ष्मण झूला रेगुलर पुलिस स्टेशन को स्थानांतरित कर दिया गया, रिसॉर्ट पर छापा मारा गया और सौरभ को गिरफ्तार कर लिया गया, पुलकित आर्य फरार रहा बाद में 23 तारीख को पिता विनोद आर्य पुलकित और अंकित सरेंडर हुए । 23 तारीख को यूकेडी की महिला नेता प्रमिला रावत व अन्य अंकिता का पता लगाने की मांग को लेकर ऋषिकेश में घरने पर बैठ गईं।जगह जगह विरोध प्रदशन हुए इतने बवाल के बाद डीएम ने बैराज बंद करने की धमकी दी और बैराज बंद कियाद्य बेराज के पानी का स्तर कम होने पर 24 तारीख कों अंकिता का शव बरामद हुआ द्य कार्यवाही के दौरान होटल को सील कर दिया गया था| 23 और 24 तारीख की रात रिसोर्ट में बुलडोजर चला दिया गया और अंकिता के कमरे वाले हिस्से में आग लगा डी गईद्य द्यमामले में आरोपी ने कहानी गढ़ी कि अंकिता चिल्ला बैराज में कूद गई थीएजबकि मृतक अंकिता के आगे का दांत टूटा हुआ था, हाथों पर खरोच के निशान थे और हथेलियों पर काले निशान थे। हालांकि अपराध स्थल को सील करने के दावा किया गया ।

इस पूरे मामले में सरकारी कर्मचारी से लेकर सफेदपोश तक की साजिश में लिप्त होने की आशंका कों देखते हुए देश भर के विशेष कर महिला संगठनों की फेक्ट फाइंडिंग टीम 27 से 29 अक्टूबर तक मौका मुआइना के लिए उत्तराखंड के दौरे पर गई जिसमे एडवा के केंद्र से साथी मैमुना और उत्तराखंड राज्य केंद्र से साथी इंदु नौडियाल और दमयंती शामिल रहीए

टीम कों पुलिस प्रसाशन के दावों पर यकीन न होने के कई आधार थे द्य यमकेश्वर की विधायक रेणु बिष्ट को बुलडोजर कैसे पहुंचा और कैसे रातों रात बुलडोजर से अंकिता के कमरे कों तुडवा दिया गया एयह किसके इशारे पर हुआ घ्आग कैसे और किसने लगाईघ् अंकिता के फोन और कॉल रिकॉर्ड कहाँ है?एल सी डी समेत सभी सामान नष्ट कर दिया गयाए। श्रीनगर के अस्पताल में शव रखा था तो भी उन्होंने परिवार के सदस्यों को अलग कर दिया और उनके साथ अलग से बात की, एक को यह नहीं पता था कि दूसरा अनुमति के मामले में क्या कह रहा है। उन्होंने यह कहकर अंकिता की मां को मनाने की कोशिश की कि वह जिस आंगनवाड़ी में काम कर रही हैं, उसे अपग्रेड किया जाएगा। पिता ने कहा कि दाह संस्कार की अनुमति देने के लिए उन पर अधिकारियों का भारी दबाव था। उसे बताया गया कि उसकी पत्नी बीमार हो गई है और वह आईसीयू में है, जिसका अर्थ है कि वह बात करने की स्थिति में नहीं है।

फेक्ट फाइंडिंग टीम के एक समूह ने 27 अक्टूबर कों वनंतरा रिजॉर्ट और धरना स्थल का दौरा किया लेकिन इन्हें आस पास कहीं भी जाने की अनुमति नहीं थी।मौके पर पुलिस का पहरा होने से समूह के सदस्यों ने आसपास के कई होटल व्यवसायियों से बात की जिन्हें आईसीसी या एलसीसी का कोई ज्ञान नहीं था। लेकिन उन्होंने समूह को आईसीसी की स्थापना में मदद करने के लिए कहा। उनमें से कई ने कहा कि अब से हम महिलाओं को रोजगार के लिए नहीं भेजेंगे-यूकेडी की प्रमिला रावत के नेतृत्व में न्याय मिलने तक विरोध के लिए धरना जारी रखने का एलान किया गया । ऋषिकेश में संबंधित नागरिको से बातचीत में टीम को आगे बढ़ने के मामले में सकारात्मक ऊर्जा मिली ।

न्याय के लिए संघर्ष के क्रम में देहरादून में 28-29 अक्टूबर 2022 अधिकारियों के साथ बैठक के अलावा, टीम ने बड़े पैमाने पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की और अधिकारियों से मिलने पर कई सवाल उभर के आए..

-कि अंकिता के पिता को क्षेत्राधिकार का हवाला देकर दर-दर क्यों भटकाया गया ?जीरो एफआईआर दर्ज करने में भी देरी क्यों की गई, सीन ऑफ क्राइम को सील क्यों नहीं किया गया और सभी को जाने दिया गयाघ् विधायक रेणु बिष्ट को अंकिता के कमरे को नष्ट करने वाली जगह पर बुलडोजर चलाने की अनुमति कैसे दी गई । क्या पौड़ी के डीएम ने उन्हें अपराध स्थल को नष्ट करने की अनुमति दी थी? क्या पुलिस स्थानीय विधायक और डीएम की भूमिका की जांच करेगी ? माँ की अनुपस्थिति में दाह संस्कार करने की इतनी जल्दी क्या

थी? सर्वप्रथम ऐसे अवैध रिसॉट्र्स को उचित जांच पड़ताल के बिना लाइसेंस कैसे दिया जाता है ।

इस दौरान तथ्यान्वेषण दल ने निम्न मांगो कों सरकार के सामने रखा

अंकिता हत्याकांड मामले की निष्पक्ष और न्यायपूर्ण जांच हो और हत्यारों को बख्शा नहीं जाय।

- दोनों राजस्व पुलिस अधिकारियो की बर्खास्तगी हो द्य
- 19 तारीख को दर्ज रिपोर्ट पर कार्यवाही करने में विफल रहने और तेजी से कार्रवाई नहीं करने पर डीएम के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो।
- एसआईटी को महत्त्वपूर्ण सबूतों को नष्ट करने में विधायक रेणु बिष्ट की भूमिका की जांच करनी चाहिए। उस पर मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया जाय।
- टीम ने जानना चाहा कि क्या इस मामले में प्रमुख गवाह, अंकिता भंडारी के दोस्त पुष्प, जो इस मामले में महत्वपूर्ण कड़ी है, बननताारा रिसॉर्ट के कर्मचारी, पूर्व कर्मचारी, मेरठ के युगल इशिता और विवेक को एसआईटी द्वारा जांच के घेरे में ले लिया गया है घ्उनके वीडियो में पुलकित और बनंतरा में उनकी प्रबंधन टीम के विडियो चित्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जो हत्या के अपराध को स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण साक्ष्य है उन्हे सुरक्षित किया गया है यदि नहीं तो यह जल्द से जल्द किया जाना चाहिए।

पर्यटन पर एक नई व्यापक लैंगिक राज्य नीति -कार्य योजना और मानक संचालन प्रक्रियाएं बने।

- विशेष रूप से पर्यटन उद्योग में महिला कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो।
- चूंकि सरकार पर्यटन को बढ़ावा दे रही है, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि एक जेंडर आधारित यौन उत्पीड़न के मुद्दों को संबोधित करते हुए उत्तराखंड में पर्यटन पर व्यापक नीति कार्यस्थल, रोजगार, मजदूरी और पुनर्वास मुद्दों पर कार्यप्रणाली को सुधार और निजी क्षेत्र के भीतर भी आईसीसी सुनिश्चित करें, क्या एलसीसी सभी जिलों में मौजूद है। इसकी निगरानी रक्खी जाय ।

तथ्यान्वेषण टीम द्वारा पूछताछ के दौरान मुख्य सचिव, एसआईटी की प्रभारी डीआईजी और राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष मामले से हाथ झाड़ रहे थे, उनसे टीम को कोई विशेष जानकारी या आश्वासन नहीं दिया। पर्यटन अधिकारियों ने टीम द्वारा सुरक्षा के संबंध में दिए गए सुझावों पर आश्वासन जरूर दिया ।डीजीपी ने भी तोड़-मरोड़ कर आश्वासन दिया। उसने हत्या की तारीख 18 सितंबर 2022 का खुलासा किया और आरोपियों को आईपीसी की धारा 302 के तहत गिरफ्तार किये जाने की जानकारी दीद्य।प्रतिक्रिया स्वरुप बाद में पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने घोषणा की कि होटल उद्योग में काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा के लिए जल्द ही निर्णायक कदम उठाया जायेगा । मुख्यमंत्री ने वन भूमि पर अवैध रूप से होटल व रिसोर्ट निर्माण के खिलाफ कार्रवाई का आश्वासन दिया.कोटद्वार के वकील ने आरोपियों की ओर से केस लेने से इनकार कर दिया है. बताया जा रहा है कि कोटद्वार बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ने कहा है कि वे बाहर से आकर अभियुक्तों का प्रतिनिधित्व करने वाले वकीलों का विरोध करेंगे ।

टीम के लौटने के तुरंत बाद ही 30 तारीख को अपराध स्थल में भारी पुलिस सुरक्षा के बीच विनोद आर्या की फेक्ट्री में आग लगने की घटना की खबर चौकाने वाली रहीएनिश्चित रूप से सबूतों कों नष्ट कर अभियुक्तों को बचाने की कोशिश राजनेतिक संरक्षण के साथ निरंतर की जा रही है। पुलकित का पिता उत्तराखंड में पूर्व भाजपा विधायक और दर्जा राज्य मंत्री रहे होने के कारण आरोपियों के तार भाजपा सरकार से सीधे जुड़े होने से टीम द्वारा पहले ही इस मामले की जाँच पूर्वाग्रह के बिना किये जाने हेतु की गई ।

मामले में अब तक की जाँच कार्यवाही में संदेह व्यक्त करते हुए उत्तराखण्ड हाई कोर्ट में अंकिता के पिता ने न्यय की गुहार लगाई गई है जिसमें सुनवाई के दौरान उन्होने सरकार

द्वारा गठित एसआईटी पर अविश्वास जताते हुए धामी सरकार पर सीधे पक्षपात का आरोप लगाया और कहा की सरकार वीआईपी को बचाने की कोशिश में लगी हुई है। उन्होने उक्त मामले की सीबीआई जांच की मांग की है, और आरोप लगाया है कि जागों उत्तराखण्ड के तहत उनकी बेटी के लिए चन्दा इक्टठा करने की आड में मामले को दबाया जा रहा है और लगातार साजिशों के तहत आरोपियों और बचाव के साक्ष्यों को मिटाया जा रहा है। बहरहाल पूरे घटनाक्रम में धामी सरकार घेरे में हैद्य जनता का दबाव और शासन प्रशासन की निष्पक्ष और संवेदनशील कार्यवाही ही अंकिता हत्याकांड में लिप्त सफेदपोशों कों कटघरे में ला सकती है और 18 सितम्बर को रिसोर्ट के वीआईपी मेहमान कों बेनकाब भी।

डिस्क्लेमर: अंकिता भंडारी हत्याकांड के संदर्भ में उत्तराखंड का दौरा करने वाली महिला संगठनों की संयुक्त तथ्यान्वेषी टीम की रिपोर्ट तैयार की जा रही है। यह लेख टीम में AIDWA प्रतिभागियों की शुरुआती छापें हैं और इन्हें समग्र रिपोर्ट के लिए इनपुट के रूप में भेजा गया है। यह AIDWA को प्रारंभिक सूचना के रूप में भेजा जा रहा है । फैक्ट फाइंडिंग टीम की रिपोर्ट तैयार हो रही है जो तैयार होने पर सार्वजनिक की जाएगी ।

-कविता-

देर से समझ आया

शालिनी सिंह
(सदस्य , जनवादी लेखक संघ)

देर से समझ आया कि असल सुख मेधा की चैतन्यता में था
और हम उबटन तेल फुलेल से चेहरा चमकाने में आनंद ढूँढते रहे
जब कि तुम और मैं दोनों जानते थे कि
देह की सुंदरता और जीवन में कोई अंतरसंबंध नहीं है

तुम जाने कितनी बार,कितनी तरह से गर्वोन्मत होकर हुंकारी भरवाते रहे कि लावण्यमयी स्त्री पुरुषों को शोभती है
तो हम हर बार ग्लानि से भर जाते कि औरतें जन्मना इतनी कमतर हैं कि वे आड़े बेड़े किसी भी आदमी पर रीझने के लिए ही जन्मी हैं

परम्पराओं के अहर्निश ताप से देह झुलसती तो भी हम अपरान्ह की व्यस्त दिनचर्या में ठहरकर
टीवी पर पसंदीदा धारावाहिक देखना नहीं भूलते
जब नायक नायिका के सामने प्रेम प्रस्ताव रखता
हमारे मन हुलसने लगते
और फिर थोड़ी ही देर बाद हम गहरी चिंता में डूब जाते कि कब तक हमारे बुझे मन उधार की रोशनी में उजाला तलाशेंगे

इधर हम दृश्य अदृश्य के सवालों के उलझे गोले सुलझा रहे थे
उधर स्त्रीवाद संसार के विरुद्ध जाकर हमारे हक़ की लड़ाई लड़ रहा था
और हम इतने सयाने थे कि उनसे ही जिरह कर रहे थे
संध्या बैठकों में आदमियों का समूह ग्लास में बर्फ़ डालते हुए अपने अपने वर्चस्व के क़िस्से सुना रहा था
इधर सोशल मीडिया पर उनकी पत्नियों का गल्प विडीओ वायरल हो चुका था
जहाँ वे अपने पतियों को बेलन लेकर दौड़ा रहीं थीं
और उनकी सहेलियों का बड़ा खेमा उस पर चुटकियाँ लेते हुए हँस रहा था
कि मानो ये उनके जीवन की सच्ची घटना पर आधारित कोई दृश्य हो

दुनिया में बाज़ार इस कदर घुस आया था कि
उसने महीनों और उत्सवों के रंग नियत करने का नया चलन शुरू कर दिया था
अब औरतें अपने साथी की विचारों से नही कपड़ों से ट्युनिंग मिलाने लगीं थीं

वैचारिकता की धुँध जितना छँटती थी
बाज़ार का रुमान उतना ही तेज़ी से चढ़ता जाता था
औरतें जो रोज मर मर कर जीने की खूब भली अदाकारी करना जानती थीं
चल पड़ी थीं उसी पथ पर,
जहाँ से काँटे चुनते हुए हमारे पाँवों में छाले पड़े थे